लर्निंग गारंटी कार्यक्रम उत्तराखण्ड

प्रवाह

अंक : मई – जून 2010

सर्व शिक्षा अभियान
जब पढ़े जब बढ़े
उत्तराखण्ड

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन

संपादकीय

इस बार मैं आपसे बात करना चाहता हूं कि एक बच्चे को कैसे देखा जाए? उसे देखने का हमारा नजरिया कैसा हो? मैं आपसे समझना चाहता हूं कि ऐसी कौन सी बातें हैं जिन्हें हम बच्चे को आमतौर पर सिखाना चाहते हैं। 'झूठ मत बोलो, बड़ों का आदर करो' आदि बातें। ये बातें हम बच्चे को ठोक-ठोककर सिखाने का प्रयास करते हैं। 'बड़ों का आदर करो', फिर बड़े चाहे कैसे भी हों? इन बातों से कुछ सवाल उठते हैं जिन्हें मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। इन सवालों से बहुतों को दिक्कत रही है। यहां तक मेरे पिताजी को भी इस बात की दिक्कत रही है। मैं इसे व्यक्त करना चाहता हूं – एक बार मेरे पिताजी जब मेरे घर आए उस समय मेरा बेटा यही कोई दो या तीन साल का रहा होगा। उन्होंने मुझसे कहा कि तुमने अपने बच्चे को प्रणाम कहना तो सिखाया नहीं। मैंने कहा अभी छोटा है धीरे-धीरे सीख जाएगा। वे बोले, ''अभी नहीं सिखाया तो फिर आगे नहीं सीख पाएगा।'' उस समय तो इस पर खास चर्चा नहीं हुई। दो-तीन दिन बाद एकाएक चर्चा और बढ़ गयी। उन्हें लगा कि उनके कहने के बावजूद भी मैं उसे कुछ नहीं सिखा रहा। मुझे लगा कि अब इस पर कुछ बात करनी होगी नहीं तो बात और अधिक बढ़ जाएगी। दरअसल मैं खुद नहीं जान पा रहा था कि इतने छोटे बच्चे को कैसे सिखाएं कि बड़ों का आदर करना चाहिए। इसमें यह समस्या है, सदियों से हमने इस बहाने छोटों को कभी इज्जत करने के योग्य नहीं माना। समाज में हमने इस बात को कई तरह से सीखा है कि छोटे इज्जत के काबिल नहीं हैं। यह सीखा हो या नहीं कि बड़े इज्जत के काबिल हैं या नहीं पर यह अवश्य सीख लिया कि छोटे इज्जत के काबिल नहीं हैं। हमने आयु, जाति, वर्ण, लिंग व रिहाइश को लेकर किसी को छोटा मान लिया और बहुत सारे लोगों को आगे आने का अवसर ही नहीं दिया। छोटों के सामने तो कई कसौटियां हैं पर बड़े के सामने एक ही कसौटी है बड़ा होने की कि वह बड़ा है और उसे यह सिद्ध नहीं करना है। बड़ा होना बड़ो ने तय बात मानी। यदि हमारे पास निष्पादित करने की कोई कसौटी नहीं है तो फिर छोटों के पास भी कोई कसौटी नहीं है आदर करने की। इसलिए उन्होंने मान लिया कि वे किसी की इज्जत भी कर देंगे तो क्या चला जाएगा। इस पर पिताजी ने कहा तुम तो इसमें बहस करने लगे और पता नहीं क्या-क्या सोचने लगे।

इसके माध्यम से यहां पर एक बात रखना चाहता हूं, क्या बच्चे को स्वतंत्रता देना बुरा है? अगर हम तंत्रिका विज्ञान के संदर्भ में देखने की कोशिश करें कि हमारा मस्तिष्क कैसे सीखता है? इस पर 1980 के उपरांत से बड़े-बड़े शोध हो रहे हैं। आजकल विभिन्न अवसरों पर एम. आर.आई. होती है। उसके माध्यम से इमेज निकाली जाती हैं यदि आप तनाव में होते हैं तो आपका दिमाग कैसे प्रतिक्रिया करता है और जब आप खुश होते हैं तो दिमाग कैसे काम करता है। दिमाग को मोटे तौर पर हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। इसके बाहर का हिस्सा सूचनाओं को लेने का काम करता है तथा बीच का हिस्सा उसे प्रोसेस करता है। नीचे का हिस्सा जो मेरुदंड से जुड़ा होता है वह उस सूचना को शरीर में भेजने का काम करता है। जब हम तनाव में होते हैं तो रक्त का संचार जो कि दिमाग तक जाता है मेरुदंड के ऊपरी छोर पर रुक जाता है। ये सारी चीजें एम.आर.आई. से देखी जा सकती हैं। जब दिमाग के अंदरूनी हिस्से में रक्त का संचार बंद हो जाता है तो वह कार्य करना या सोचना बंद कर देता है। रक्त दिमाग तक नहीं पहुंचता इस कारण दिमाग न तो कुछ सोच रहा होता है और न ही कोई संकेत भेज रहा होता है। इससे दिमाग का सोचने वाला हिस्सा तनाव में आ जाता है। इसी स्थान में ही सीखने की प्रक्रिया होती है। अब आप ही बताइए क्या एक तनावग्रस्त बच्चा अपने सीखने की क्षमता का पूरा उपयोग कर पाएगा? इस बात पर सोचे जाने की जरूरत है और यह बात आगे हमें बच्चों के सीखने के नए सिद्धातों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। जिसमें यह माना जाता है कि बच्चा स्वयं सीखने वाला होता है। बच्चों के सीखने में स्वतत्रंता व भयमुक्त माहौल का महत्वपूर्ण स्थान है। इन बातों पर विचार करने की जरूरत है।

अनंत गंगोला
राज्य प्रमुख
अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उत्तराखण्ड

अमाप्य गतिविधियों का महत्व

– डेविड ऑसबरॉ

काम के कई पहलू बहुधा शिक्षाक्रम से बाहर छोड़ दिए जाते हैं। इस लेख में उन्हें शिक्षाक्रम में शामिल करने के लिए कुछ आधारों को स्पष्ट करने का अति संक्षेप में प्रयास किया गया है। काम के इन पहलुओं को कई बार सीखने के अमाप्य (नॉन-मेजरेबल) क्षेत्र कहा जाता है, क्योंकि इनका मूल्यांकन शिक्षाक्रम के सामान्य विषयों की तुलना में अधिक मुश्किल है। इस संक्षिप्त लेख में तो इन विषयों पर सविस्तार संभव नहीं होगी, पर आगे आने वाले लेखों में इसके लिए प्रयास होंगे।

इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण विषय है : कला, हस्तशिल्प, नृत्य, नाट्य, संगीत और गायन, बागवानी तथा पर्यावरण का अध्ययन। तीन अन्य विषय, जो उपरोक्त से बहुत नजदीकी संबंध रखते हैं, वे हैं: निर्णय लेना, विमर्श तथा नैतिकता।

उपरोक्त में से कई या सभी विषय सामान्यता सुविधापूर्वक शिक्षाक्रम से बाहर रह जाते हैं। यदि किसी कारणवश इन्हें शिक्षाक्रम में लिख भी दिया जाता है तो शिक्षक इनकी कोई परवाह नहीं करते, अत: विद्यालय की रोजमर्रा की गतिविधियों का हिस्सा ये कभी नहीं बन पाते।

इस प्रकार की गतिविधियों को प्राय: छोड़ क्यों दिया जाता है?

पहली बात तो यह कि बाल शिक्षा में इन गतिविधियों के महत्व की कोई वास्तविक समझ ही नहीं है। अधिक से अधिक इनको हॉबीज के रुप में देखा जाता है। ऐसी गतिविधियों के रुप में कि जो बच्चों को या तो व्यस्त रखने के लिए या उन्हें सामान्य विद्यालयी विषयों के गंभीर अध्ययन से बदलाव का मौका देने के लिए कार्रवाई की जा सके।

अगली बात यह कि ये सामान्यतया शिक्षाक्रम में नहीं होते, इनके लिए कोई सुविचारित एवं व्यावहारिक पाठ्यक्रम शायद ही कभी पाया जाता हो, इन्हें विद्यालयों की समय सारणी में नहीं रखा जाता और उन संस्थानों में इनका अध्ययन नहीं होता जो सेवापूर्व प्रशिक्षण देते हैं। इसका अर्थ यह है कि अधिकतर शिक्षकों में, उनके अपने शिक्षक-प्रशिक्षण के कारण और अपनी विद्यालयी शिक्षा के अनुभवों के कारण इन गतिविधियों के लिए आवश्यक क्षमता ही नहीं होती। और वे इन गतिविधियों के लिए आवश्यक अभिप्रेरणा भी बच्चों को नहीं दे सकते।

अगला कारण, वर्तमान शिक्षा केवल सूचना से सरोकार रखती है। बच्चे के पहली कक्षा में प्रवेश से लेकर, उसके विद्यार्थी बनने एवं स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने तक उसकी शिक्षा का पूरा बल असंबद्ध जानकारी के टुकड़े रटने पर ही रहता है, जो प्रथम अवसर मिलते ही शीघ्रता से भुला दिए जाते हैं। अमाप्य गतिविधियों के शिक्षण के लिए अलग प्रकार की शिक्षण-विधि एवं एक बच्चे के सीखने के प्रति इन भिन्न दृष्टिकोण की जरुरत होती है। बहुत ही कम शिक्षक इन विधियों एवं दृष्टिकोण को सीखने-समझने के लिए आवश्यक क्षमतावान हैं या समय देने को तैयार हैं।

अंत में इनका मूल्यांकन कठिन है और कई बार असंभव है। और क्योंकि सभी मूल्यांकन विशेषज्ञों की यह अभ्युक्ति है कि जो सीखा जाए उसका मूल्यांकन अवश्य हो, अत: ये गतिविधियां शैक्षणिक प्रक्रिया का हिस्सा कभी नहीं बनती। शिक्षाक्रम में इनकी अनुपस्थिति के लिए इतने वजनी कारणों को देखते हुए पूछा जा सकता है कि आखिर इन गतिविधियों की उपयोगिता क्या है?इनको महत्व दिए जाने के कई कारण हैं। इन कारणों का जिक्र मैं अलग-अलग अनुच्छेदों में करुंगा।

1. ये गतिविधियां बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए अत्यावश्यक है। आश्चर्य की बात है कि प्रत्येक शिक्षाशास्त्री, प्रत्येक शिक्षा विभाग और शिक्षा आयोग सिद्धांत में इन गतिविधियों का समर्थन करता है। ऐसे बहुत से उदाहरण में से एक कोठारी आयोग की 1986 की रिपोर्ट से यहां उद्धृत कर रहे हैं : ''खोज और आविष्कार को महत्वपूर्ण मानने वाले युग में सृजनात्मक अभिव्यक्ति विशेष रुप से महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा में कला की अवहेलना से शिक्षण-प्रक्रिया दरिद्र हो जाती है।''

   वर्तमान शिक्षा प्रणाली से अधिक दरिद्र कुछ नहीं हो सकता। मेरे विचार से शाला त्यागी बच्चों में त्रासद प्रतिशत (पांचवी तक 70 प्रतिशत) के मुख्य कारण आर्थिक नहीं बालक अभिप्रेरण एवं आनन्द की कमी है। स्कूल एक नीरस, दु:खदायी और अनुपयोगी गतिविधि है और यही कारण है कि बच्चे जैसे ही संभव होता है, इसे छोड़ देते हैं।

2. ये गतिविधियों उपयोगी हैं क्योंकि सामान्यत: इनका सरोकार समस्या समाधान से होता है और जानकारी देने से कुछ खास सरोकार नहीं होता। यह सही है कि चूंकि स्वयं शिक्षक को इस तरह की गतिविधियों में अपने विद्यालय या महाविद्यालय में भागीदार का लाभ नहीं मिला होता है अत: उसे इनमें काम करवाना मुश्किल लगता है। इस कारण बहुत बार वह सूचना देने वाले विषयों में परिणित

कर देता है और इसी तरह उनका मूल्यांकन करता है। उदाहरण के लिए शिक्षक श्यामपट्ट पर एक फूल बना देगा और कला शिक्षण में बच्चों को अपनी कापी में उसकी नकल करने को कह देगा। इस तरह बच्चों ने हूबहू नकल की या नहीं की, इसके अनुसार उन्हें 10 में से कोई नम्बर देना संभव हो जाता है। यदि सब बच्चे भिन्न-भिन्न चीजें बनाएंगे तो उनका मूल्यांकन कैसे होगा ?

दुर्भाग्य से, आजकल बहुत ही कम विद्यालयी विषयों में बच्चों की समस्या समाधान संबंधी गतिविधियों में मशगूली होने की अनुमति मिल पाती है। आरंभिक कक्षाओं में बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं, वह सूचना भर होती है। उदाहरणार्थ, मातृभाषा शिक्षण में बच्चा पुस्तक को रट लेता है और उसे अपने वाक्य बनाने का या भाषा का इस प्रकार उपयोग करने का जिसमें समस्या समाधान लाजमी हो उसे कोई मौका नहीं मिलता। ऊपर वर्णित गतिविधियां बच्चे को समस्या समाधान का बहुत अभ्यास और अवसर प्रदान करती हैं, जो कि उसे अन्य विषयों में नहीं मिलता।

3. इन गतिविधियों का एक और लाभ अवधारणा निर्माण के क्षेत्र में है। वर्तमान विद्यालयी पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में अवधारणा बनाना लगभग पूरी तरह अनुपस्थित है। पर हस्तशिल्प, नाटक आदि गतिविधियों में बच्चों को कई अवसर मिलेंगे, जहां वे नई अवधारणाएं सीख सकेंगे या उन अवधारणाओं को दोहरा सकेंगे जो पहले ठीक से नहीं सीखी गई हैं।
4. विद्यालय में झांकने भर से ही स्पष्ट हो जाएगा कि पूरे दिन में एक सामान्य बच्चे को अपने निर्णय लेने का कोई अवसर नहीं मिलता। उसे कक्षा में क्या करना है, क्या पढ़ना है, कौन से सवाल करने हैं, क्या लिखना है और ये सब कब करना है- इस तरह के निर्णय उसके लिए पहले ही शिक्षक ने कर लिए हैं, उसे क्या पढ़ना है- यह तो पाठ्यपुस्तकों ने ही तय कर दिया है। उपरोक्त गतिविधियों का एक लाभ यह है कि यदि उन्हें ठीक से करवाया जाए तो इनमें बच्चों को अपने निर्णय करने के असंख्य अवसर मिलेंगे। साफ ही है कि निर्णय ले सकना जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षमता है और इतना ही साफ यह भी है कि अधिकांश विद्यालयों में इस क्षमता का दारुण अभाव है।
5. अगला लाभ यह है कि ये गतिविधियां नितांत आनंददायक हैं। बच्चों को चीजें बनाने में मजा आता है, उन्हें गाना, नाचना और नाटक बेहद पसंद होता है। बहुधा यही वे गतिविधियां होती हैं जिनके माध्यम से बच्चे को शिक्षा से सच्चा लगाव पैदा होता है और इन्हीं दक्षताओं के माध्यम से, तथा इनसे मिलने वाले आनंद के कारण और वास्तव में तो इनमें प्राप्त सफलता के कारण ही बच्चे को वह अभिप्रेरण मिलता है जो शिक्षण प्रक्रिया का निहायत ही जरुरी हिस्सा है।
6. एक और लाभ इन गतिविधियों का यह है कि बच्चा जो भाषा, गणित एवं विज्ञान में सीखता है, उसको हस्तशिल्प में किए गए काम से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी का काम ये गतिविधियां करती हैं। उदाहरणार्थ बच्चा गणित की पुस्तक के माध्यम से आधे और चौथाई का अतंर सीख सकता है, पर हस्तशिल्प की कक्षा में कागज को नापने आदि में इन गणितीय अवधारणाओं का अतंर स्पष्ट होता है। विभिन्न विषयों में संबंध स्थापित करने के अलावा ये गतिविधियां ध्यान केन्द्रण के तत्वों को भी बढ़ाती हैं, खासकर उन व्यक्तिनिष्ठ तत्वों को जिनमें मिजाज एवं आदतें शामिल हैं।
7. एक और अत्यधिक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि पदार्थ सामान्यत: वयस्क द्वारा कक्षा में लागू किए गए अनुशासन से भिन्न प्रकार का अनुशासन सिखाते हैं। गीली मिट्टी के साथ सही तरह का व्यवहार करना ही पड़ेगा, नहीं तो यह तिड़क जायेगी, टेढ़ी-मेढ़ी हो जाएगी। यह बच्चे के लिए एक नए प्रकार का अनुशासन है जो किसी वयस्क द्वारा नहीं बल्कि स्वयं सामग्री द्वारा लगाया गया है। जैसे-जैसे बच्चा हस्तशिल्प की गतिविधियां करता जाता है, वह पदार्थ द्वारा लगाए जान वाले अनुशासन के प्रति सचेत होता जाता है। परिणामस्वरुप वयस्कों द्वारा लगाए जाने वाले अनुशासन को अधिक समझदारी से ग्रहण करता है।
8. इन सब लाभों के अलावा हमें सीखने के हस्तान्तरण को नहीं भूलना चाहिए। अब इसमें कोई शक नहीं रह गया है कि किसी एक क्षेत्र में समस्या समाधान की गतिविधियां यदि अच्छी तरह सिखाई जाएं तो इनसे बच्चा अन्य क्षेत्रों में समाधान की क्षमता भी प्राप्त करता है।

इस लेख के आरंभ में उल्लेखित दो बिंदुओं, विमर्श और नैतिकता पर किसी आगे आने वाले लेख में विचार करेंगे।

अनुवाद : रोहित धनकर

आधार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'डेविड ऑसबरॉ और नीलबाग स्कूल' से साभार।

प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति- एक साहित्यकार की टिप्पणियां

– रमेश चंद्र शाह

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार, कवि-आलोचक श्री रमेश चंद्र शाह से यह प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी बातचीत रानीखेत में उनके ग्रीष्मकालीन प्रवास के दौरान मई 2010 में सम्पन्न हुई। यहां वे अपने नए उपन्यास पर काम कर रहे थे। बातचीत की शुरूआत इस प्रश्न से हुई कि वे साहित्यकार होने के नाते वे शिक्षा को कैसे देखते हैं? इस पर उन्होंने बताया कि शिक्षा को एक जिन्मेदार नागरिक की तरह तथा स्वयं प्राध्यापक होने के नाते उन्होंने बहुत गंभीरता से लिया है । जहाँ तक शुरूआती शिक्षा की बात है मेरे अपने जीवन में तथा बौद्धिक जीवन में भी शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । इसका अंदाजा आप मेरे पहले उपन्यास 'गोबर गणेश' को पढ़कर लगा सकते हैं । अध्यापक चलती-फिरती आत्माओं की शिल्पी-वास्तुकार है। वह बच्चों के अंत:करण को गढ़ता है । मनौवैज्ञानिक रूप से भी मनुष्य को आयु के प्रथम दस साल सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं । जब बच्चा स्कूल जाने लगता है तो अपने शिक्षक की बात को सर्वोपरि महत्व देता है। वह अपने माता-पिता से यह कह सकता है कि तुमने यह गलत बताया । वह शिक्षक की बात पर अधिक विश्वास करता है ।

जहाँ तक प्राथमिक शिक्षा की बात है वह हमारा प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए। स्वतंत्रता के पहले दस-पन्द्रह वर्षों में सरकार को व्यापक रूप से साक्षरता अभियान चलाना चाहिए था और एक न्यूनतम साक्षरता का लक्ष्य अवश्य रखा जाना चाहिए था और इस पर गंभीरता से काम किया जाना चाहिए था। लेकिन इस कार्य में हमारे राजनैतिक पूरी तरह असफल रहे हैं । मैं यहाँ तक कहूँगा कि यह अपराध के स्तर की असफलता है।

वर्तमान समय में भी जो सरकारी शिक्षा व्यवस्था है उससे मेरे जैसा साहित्यकार संतुष्ट कैसे हो सकता है? सरकार की ओर से कहीं भी गंभीर पहल नहीं है । समाज में कॉन्वेंट व पब्लिक स्कूलों की जूठन बिखरी हुई है। सरकारी स्कूलों की हालत सबसे खराब है। अपने समय को याद करूं तो यह कह सकता हूं कि हम जब स्कूल जाते थे तो अधिकतर सब सरकारी स्कूल ही थे। यदा-कदा कुछ मिशनरी स्कूल थे जो प्रिविलेज़ क्लास के बच्चों के लिए थे। आज मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में कोई ऐसा हिन्दी माध्याम वला स्कूल नहीं है जहाँ कोई अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ने भेजना चाहते हों । अध्यापक बन जाने में क्या लगता है? कुछ नहीं। न योग्यता न रुचि। 'टीचिंग इज़ एवरीबडी कप ऑफ टी'। डॉक्टर, इंजीनियर बनने में आपको चार-पाँच साल लगाने पड़ते हैं। कठिन परिश्रम करना पड़ता है लेकिन शिक्षक बनने के लिए ऐसा कुछ नहीं है। एक दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त कर या बिना उसके भी कोई भी शिक्षक बन जाता है। इससे शिक्षा का स्तर भी गिरता है।

भाषा की शिक्षा उस समय बहुत समृद्ध थी। मैं यहाँ अंग्रेजी की बात नहीं कर रहा हिन्दी और संस्कृत की बात कर रहा हूँ। उस समय शिक्षक बच्चों की भाषा पर बहुत ध्यान देते थे। आज का भाषा शिक्षण बहुत दरिद्र है। बच्चों के भाषा विकास, साहित्यिक रूचि पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। मनुष्य की जिज्ञासा व चिंतन शक्ति को जागृत करना शिक्षा का मुख्य काम है। यह कोई बाहर से थोपी जाने वाली चीज़ नहीं है। यह प्रत्येक बच्चे के अंदर विकास के बीज के रूप में विद्यमान है। इस बीज को ही पल्लवित करने पर शिक्षक को ध्यान देना है। इसके बारे में सोचना है। साहित्य में भाषा चरमोत्कर्ष पर होती है। इसे शिक्षक को समझना चाहिए और इस पर ध्यान देना चाहए। जिसका आज के विद्यालयों में नितांत अभाव हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बच्चों के एकांगी और तथाकथित बौद्धिक विकास पर ही ध्यान दिया गया है। जिससे डाक्टर, इंजीनियर, टेक्नीशियन, प्रबंधक तो बहुत पैदा हो गए हैं। इन क्षेत्रों में ज्ञान भी बहुत उन्नत हुआ है। किन्तु वहीं विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं नैतिक विकास पर हमने कोई ध्यान नहीं दिया है। इससे समाज में सहिष्णुता, संवेदनशीलता जैसे मूल्यों का ह्रास हुआ है। इस तरह शिक्षण प्रक्रिया नितांत एकांगी हो गयी है। आज की शिक्षा के द्वारा हम नदी की चाल नहीं समझ सकते, पेड़ में हवा किस तरफ से बह रही है यह नहीं समझते, अलग-अलग पदार्थों के स्वाद को नहीं समझते। ये सब चीजें गायब हो गयी हैं। कई चीजें जैसे - खानपान, वेशभूषा आदि एक जैसी हो गयीं हैं । समाज में विविधता गायब हो गयी है। सौन्दर्य दृष्टि गायब हो गयी है। और उसी के साथ सुरुचि, सलीका तथा मात्रा-ज्ञान भी गायब हो गया है।

आगे यह पूछे जाने पर कि क्या शिक्षक भाषा शिक्षण के दौरान केवल पाठ्यपुस्तकों के प्रश्नोत्तर को पूरा करना अपना काम समझता है। इस पर उन्होंने कहा शिक्षक की पढ़ाने में

अभिरूचि ही नहीं है। उसकी भाषा पर पकड़ नहीं है। जब उसकी भाषा पर अच्छी पकड़ होगी तभी वह भाषा अच्छी तरह पढ़ा पाएगा तथा भाषा का मूल्य समझेगा। दरअसल शिक्षक भी पूरी तरह यांत्रिक हो गया है। अगर बच्चों में कल्पनाशीलता व सृजनशीलता बढ़ानी है तो इस यांत्रिकता से बचना होगा । शिक्षकों के बारे में उन्होंने आगे कहा कि आज शिक्षकों की तनख्वाह भी अच्छी है। जब मैंने कुछ समय हाईस्कूल के स्तर पर शिक्षण कार्य किया था तो साठ रूपये मिलते थे। आज इतनी तनख्वाह व मान-सम्मान मिलने के बाद भी शिक्षक अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं है । वह अपने अधिकारों के प्रति कदापि जागरूक है लेकिन अपने कर्तव्यों के प्रति नही। शिक्षक को यह पता होना चाहिए कि सरकार शिक्षा पर कितना खर्च करती है? उस पैसे का कितना उपयोग हो रहा है। उसको आगे इस बारे में सोचना भी चाहिए कि सरकार जितना खर्च कर रही है उसका ऋण जनता को वह कैसे लौटाए? आई.आई. टी. पास कर लोग आई.ए.एस. बन रहे हैं । उन्हें क्या अधिकार है कि उन पर खर्च किया गया सरकार का करोड़ो रुपया बरबाद कर देने का यह देश और समाज के प्रति अन्याय है उनकी सारी उच्च प्रौद्योगिकी शिक्षा की पढ़ाई बेकार हो गई। अगर उन्हें आई.ए.एस. ही बनना था तो उन्होंने सरकार का इतना पैसा क्यों बरबाद किया? केवल ब्यूरोक्रेसी के मज़े लेने के लिए? या सब पर रौब जमाने के लिए। यह मनोवृत्ति ठीक नहीं है। यह सब आज की शिक्षा की देन है। आज का विद्यार्थी जीवन में बहुत जल्दी पैसा और रुतबा पाना चाहता है चाहे वो कैसे भी आया हो। हम लोगों के समय इस तरह की सोच नहीं थी। आई. ए .एस. में जाने की कभी सोची ही नहीं, उस समय लोग शिक्षक के पेशे को गरिमामय अच्छा समझते थे । वर्तमान समय में हमें यह मानने में कोई हिचक नहीं होना चाहिए कि विदेशों में शिक्षा का स्तर यहाँ की शिक्षा से बहुत आगे है।

शिक्षा में धर्म को आप कैसे देखते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि धर्म हमारे जीवन का अभिन्न अंग है और इसे शिक्षा से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। यह हमारी संस्कृति का मुख्य भाग है। धर्म का अर्थ है- जो सब कुछ को धारण करता है। इसका यह मतलब नहीं हैं कि स्कूल हमें बताए कि तुम हिंदू हो, मुसलमान हो, तुम्हें यह करना चाहिए। अब गाय के गोबर व तुलसी के पौधे को हम अपनी संस्कृति से कैसे अलग कर सकते हैं? धर्म कहीं न कहीं मनुष्यता सिखाता है व प्रेम करना भी सिखाता है। धार्मिक होते हुए भी हम अपनी दृष्टि में उदार-सहिष्णु, सर्वधर्मसम्भावी हो सकते हैं। अधिकतर बुद्धिजीवी शिक्षण से जब धर्म को अलग करने की बात करते हैं तो इसके बारे में उनका कहना था कि उनके पास सारे विचार बाहर के हैं। उन्होंने कभी भी श्री अरविन्द को नहीं पढ़ा होगा। उनके शैक्षिक विचारों को भी नहीं सुना होगा । गांधी को भी नहीं पढ़ा होगा। जिन्होंने शिक्षा में श्रम की महत्ता को पहचाना था। उन्होंने धर्मपाल को भी नहीं पढ़ा होगा। अगर आप धर्मपाल जी की पुस्तक 'दि ब्यूटीफुल ट्री' पढ़ें तो उससे पता चलेगा कि अंग्रेजों के आने के समय भारत में शिक्षा व्यवस्था क्या थी ?और यहां ज्ञान -विज्ञान भी उन्नत था । ज्ञान विज्ञान तो प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है। शून्य व पाई का अविष्कार यहीं हुआ है। पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने का विचार भी प्राचीन ग्रंथों में यहां मौजूद था। इन चीजों के लिए 'लीलावती', शुल्वसूत्र इत्यादि को देखा जा सकता है।

बाल साहित्य के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बांग्ला भाषा में बाल साहित्य की समृद्ध परम्परा रही है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उच्चकोटि बाल साहित्य भी लिखा है। आगे उन्होंने कहा कि बाल साहित्य में नयापन और बच्चों जैसी कल्पना-शक्ति होनी चाहिए। इसके साथ ही बाल साहित्य में बच्चों के अनुभवों को एक पूर्णता के रूप में देखना चाहिए न कि इसे तोड़-तोड़ कर। बच्चों की जो भी अवस्था हो। उसे हमें यह समझना चाहिए कि वह बच्चों के लिए एक पूर्ण अनुभव है। हालांकि वर्तमान समय में बच्चे एकल परिवारों में रहते हैं और बच्चों को कहानी, गीत, लोककथा आदि सुनाने की परम्परा धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है । इसका बच्चों की मानसिकता पर बहुत गलत प्रभाव पड़ता है। इंग्लैण्ड में चार्ल्स डिकेन्स का लिखा साहित्य आज भी पढ़ा जाता है। इसलिए कि एक बच्चे की आँखों से देखी गई दुनिया है, वहां जीवन की शक्ति है, उत्साह है। हमारे यहां भी रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, हितोपदेश भी बाल साहित्य की परम्परा के ही अंग हैं । इन ग्रंथों में भी कल्पनाशीलता है। जो बच्चों की कल्पनाशीलता से मेल खाती है, और उसका समुचित विकास कर सकती है। इन बातों को एक शिक्षक को अपनी कक्षा में जगह देनी चाहिए। यह धर्म का नहीं, आदर्श मनुष्यता का, सुसंस्कृत मनुष्यता का, सर्वांगीण विकास का प्रश्न है। शिक्षा बाहर से थोपी जाने वाली चीज नहीं , हमारे भीतर जो पूर्णत्व की प्यास तथा संभावनाएं हैं- उन्हीं को जगाना- उकसाना और फलीभूत करना है। पर, इसके लिए शिक्षक का बुद्धिमान तथा संवेदनशील तथा कल्पनाशील होना पहली शर्त है।

प्रस्तुति-कमलेश चंद्र जोशी

मूल्यांकन एक बहुआयामी विधा

– महेन्द्र सिंह बोरा
ब्लाक सह समन्वयक ताकुला, अल्मोड़ा

वर्तमान विद्यालयी शिक्षा बच्चे द्वारा याद की गयी विषयवस्तु का ही आकलन करती है। शिक्षक पाठ्यांश को पूरा करते हैं व पाठ्य पुस्तक के ज्ञान को बच्चों को रटा देते हैं। बच्चे अपनी स्मरण शक्ति के माध्यम से पाठ्य पुस्तक की लिखित विषयवस्तु को उत्तर पुस्तिका में उतार देते हैं। इसी के आधार पर बच्चे की सफलता एवं असफलता का आकलन किया जाता है। जिस बच्चे की स्मरण शक्ति तीव्र होती है वह सभी सूचनाओं को उत्तर पुस्तिका में अंकित कर देता है, और सफल हो जाता है। जो छात्र ऐसा नहीं कर पाता है वह असफल हो जाता है तथा अवसाद एवं तनाव से ग्रस्त हो जाता है। इस तरह की शिक्षा, बच्चे को तनावग्रस्त बना देती है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों का अधिकाधिक समय पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यांशों को याद करने में व्यतीत हो जाता है। शिक्षक साल भर बच्चों को परीक्षा की तैयारी कराते हैं और सोचते हैं सभी बच्चे अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण कर लें। यदि ऐसा नहीं होता है तो शिक्षक भी कहीं न कहीं अंदर से व्यथित हो जाते हैं। जो शिक्षक इस प्रकिया को बदलना चाहते है। वे नये जोश से स्वाध्याय करते हैं तथा शिक्षण कार्य करते हैं। कुछ शिक्षक असमंजस में होते हैं तथा कुछ शिक्षक निष्क्रिय हो जाते हैं। एक शिक्षक होने के नाते हमें अधिक से अधिक चिंतन करने की आवश्यकता होती है। परीक्षा में अधिकतर छात्र पाठ्यांशों के प्रश्न को सुगमता से एवं सहज रूप से हल कर लेते हैं। परंतु प्रश्न के प्रकार एवं विधा को बदल दिया जाए, तो ऐसे प्रश्नों को पाठ्य पुस्तक से बाहर का कहकर छोड़ देते हैं। इस प्रकार की प्रणाली सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। इसके साथ ही साथ शिक्षण प्रक्रिया पर भी प्रश्न खड़ा करती है। विद्यालय में विभिन्न प्रकार की परीक्षाएं बच्चों को क्या/कितना सीखा, का आकलन करती है। बच्चे के कौशल एवं उसकी क्षमताओं का आकलन नहीं करती। वर्तमान शिक्षण प्रकिया बच्चे के अन्दर समझ एवं आत्म विश्वास पैदा नहीं करती जिससे बच्चे परीक्षा के नाम से खौफज़दा रहते हैं। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के द्वारा परीक्षा की प्रक्रिया को बदलने का एक सराहनीय प्रयास किया गया है। परीक्षा को बदलने के लिए प्रश्नों को समझ आधारित बनाना आवश्यक है। परीक्षा की प्रक्रिया में बच्चों ने क्या समझा, क्या अनुभव किया तथा उनमें कौन सी दक्षताओं का विकास हुआ। इन सभी का आकलन किया जाना आवश्यक होता है। इन सभी प्रक्रियाओं को परीक्षा में समाहित कर देने से बच्चों में आत्म विश्वास एवं चिंतन की समझ प्रारम्भ होगी। इसी प्रक्रिया को शिक्षक अपने शिक्षण में अपनाकर आनंदित भी होंगे।

परीक्षा की व्यवस्था में मूल्यांकन भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है जो बच्चों के द्वारा दी गई विभिन्न दक्षताओं पर आधारित प्रश्नों की परख कर बच्चे की शैक्षिक, मानसिक स्थिति का आकलन करता है। इसके उपरांत शिक्षक में एक नए विचार का मंथन प्रारम्भ होता है कि शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए कैसे नवाचारी योजना बनायी जाए। जो शिक्षक ऐसा चिंतन करते हैं, वे एक मननशील शिक्षक कहलाते हैं। ऐसे शिक्षक अन्य शिक्षकों के प्रेरणा स्रोत भी बन सकते हैं। इस चिंतन के माध्यम से ही बच्चों का शिक्षण करना चाहिए।

मूल्यांकन के अनुभवों से नए शिक्षा सत्र की योजना बनाने, शैक्षिक प्रक्रिया को सहज बनाने, समुदाय से सहयोग प्राप्त करने में सहजता एवं आसानी होती है। दक्षता आधारित मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करने वाली है। जिसमें बच्चे द्वारा अर्जित दक्षताओं का आकलन किया जाता है। कुल मिलाकर दक्षता आधारित मूल्यांकन में पाठ्यक्रम के साथ पाठ्यचर्या को अधिक महत्व दिया जाता है। दक्षता आधारित मूल्यांकन की विशेषताओं में बाल मैत्रीपूर्ण मूल्यांकन, पाठ्यचर्या केन्द्रित मूल्यांकन, मौखिक मूल्यांकन, पश्चपोषण तथा स्व मूल्यांकन के रूप में देखा जा सकता है।

अंत में कहा जा सकता है कि दक्षता आधारित मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों, कक्षा–कक्ष की शिक्षण प्रक्रिया व छात्र की समझ को आकलित रहने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अंतर्गत मूल्यांकन केवल पास–फेल की प्रक्रिया नहीं होती। यह एक शिक्षक के लए स्वयं सीखने तथा अपने आगे की शिक्षण योजना बनाने के काम में भी आती है। ••

सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण - कुछ अवलोकन

- सुनील कुमार साह

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के पेशेवर क्षमताओं के विकास को ध्यान में रखते हुए सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रति वर्ष 20 दिवसीय सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण का प्राविधान किया गया है। इस प्रशिक्षण में से पहले हिस्से अर्थात् 10 दिन के प्रशिक्षण का आयोजन गर्मियों की छुट्टियों में किया जाता है। इस प्रशिक्षण में बतौर प्रशिक्षक शामिल होकर शिक्षक साथियों से संवाद करने का इस बार महत्वपूर्ण मौका मिला। विगत 21-30 जून, 2010 के मध्य आयोजित शिक्षा के मूलभूत मुददों के इर्द-गिर्द संवाद करना, मेरे लिए काफी उत्साहित करने वाला कार्य था।

इस सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों में चिंतन की प्रक्रिया का विकास करना तथा उनमें शैक्षिक विषय वस्तु की समझ विकसित करना है। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि शिक्षक इस प्रशिक्षण की विषयवस्तु पर समझ विकसित करते हुए अपने स्कूली अनुभवों को जोड़ कर इस समझ को और पुख्ता करें। यह प्रशिक्षण डिजाइन के रूप में ठीक कहा जा सकता है जिसमें पाठ्यचर्या से बात शुरू कर विषय की प्रकृति तक की बात की गई थी परंतु व्यवस्थागत कमियों के कारण इसका क्रियान्वयन बहुत प्रभावी नहीं कहा जा सकता। इस पर आगे ध्यान देने की जरूरत महसूस होती है। अगर हम प्रशिक्षण की विशेषताओं पर चर्चा करें तो उन्हें निम्न बिदुंओं में रखा जा सकता है-

- इस वर्ष के प्रशिक्षण के लिए विगत वार्षिक मूल्यांकन को आधार बनाना।
- प्रशिक्षण को ज्यादा प्रभावी बनाने के लिए प्रोसेस शीट तैयार कराना।
- समय पर मॉड्यूल की उपलब्धता।
- संकुल स्तर पर इसका आयोजन।

इस संक्षिप्त अवलोकन रिपोर्ट में प्रशिक्षण के ऊधमसिंह नगर जिले के काशीपुर ब्लॉक के कनकपुर संकुल में आयोजित प्रशिक्षण से उभरे अनुभवों को समेटने का प्रयास किया जाएगा।

ऊधमसिंह नगर जिले के काशीपुर ब्लाक के कनकपुर संकुल में यह प्रशिक्षण दो बैचों में सम्पन्न हुआ। इन दो बैचों में ही नगर क्षेत्र संकुल के भी शिक्षकों को शामिल करते हुए 33-33 लोगों के दो बैच बनाए गए। इस तरह एक प्रकार से इस संकुल में दो संकुलों के शिक्षकों का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। यह प्रशिक्षण काशीपुर में स्थित राजकीय बालिका इंटर कालेज कैम्पस में आयोजित किया गया। इसी कैम्पस में जूनियर शिक्षकों का प्रशिक्षण भी संपन्न कराया गया। प्रशिक्षण के लिए कुल 3 मास्टर ट्रेनर्स थे तथा एक मैं स्वयं था। मास्टर ट्रेनरों की संख्या कम होने के कारण मुझे तथा जूनियर बैच के श्री राजेन्द्र सिंह को अकेले एक कक्ष में प्रशिक्षण का संचालन करना पड़ा। मेरा सुझाव था कि दोनों संकुल के संकुल समन्वयक भी इस प्रशिक्षण में प्रतिभाग करें, लेकिन वे व्यवस्थागत कार्यों की वजह से इसमें अपनी पूरी भागीदारी सुनिश्चित नहीं कर सके।

पहले दिन के प्रशिक्षण की शुरूआत खंड शिक्षा अधिकारी के संबोधन से हुई। जिसमें उन्होंने प्रशिक्षण के कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को सभी शिक्षक साथियों के साथ साझा किया। जिसमें आने- जाने का समय, प्रशिक्षण शुरू होने से पहले प्रार्थना सभा का आयोजन, भोजन के बदले स्वीकृत धनराशि वगैरह दिए जाने वाले पहलू प्रमुख थे। इसी क्रम में संबोधन का अवसर मुझे भी दिया गया। जिसमें मैंने शिक्षक साथियों से निवेदन किया कि इस पूरे प्रशिक्षण को आप पिछले वर्ष के मूल्यांकन के आलोक में देखने की कोशिश करें तथा कक्षा शिक्षण के संदर्भ से इसे जोड़ कर देखने का प्रयास करें।

प्रशिक्षण कक्ष की बैठक व्यवस्था प्राथमिक कक्षाओं की बैठक व्यवस्था के समान परंपरागत ही थी। इसे गोल दायरे में बनाने का प्रयास किया गया। लेकिन गर्मी तथा पंखे की उपलब्धता को आधार बनाकर शिक्षकों ने खिड़की के किनारे ही बैठना पसंद किया। प्रशिक्षण कक्ष में दो पंखे थे जिसमें से एक ठीक था और दूसरा प्रशिक्षण के अंतिम दिन ही ठीक हो पाया। प्रशिक्षण को शुरू करने से पहले कुछ नियम भी बनाए जैसे- अपने मोबाईल को वाइब्रेशन पर करने की बात, आने-जाने तथा लंच ब्रेक के समय का पालन, परंतु इसमें प्रतिभागियों का आना-जाना ही समय पर हो पाता था बाकि अन्य चीजों पर गंभीरता से अमल नहीं कर पाए।

अत्यधिक गर्मी और जनगणना कार्य में शामिल होने के बाद इसमें शामिल होने के कारण शिक्षकों में प्रशिक्षण को लेकर कोई खास रूचि नहीं थी। प्रशिक्षण के शुरूआत में ही नगर क्षेत्र के शिक्षकों ने इस बात को दर्ज करवाया कि हमारे लिए इस प्रशिक्षण का ज्यादा औचित्य नहीं रह जाता क्योंकि एक-एक शिक्षक के पास 150 से 500 तक बच्चे हैं तो इस स्थिति में हम इस में क्या कर सकते हैं? प्रशिक्षण कक्ष उन्हें एक जेल की तरह लग रहा था। उनकी इस तरह की बातें अकसर उभरकर आती थीं। कोई कहता,

''अभी जनगणना से छूटे तो यहां लगा दिए गए। प्रशिक्षण आयोजित करना था तो सर्दियों की छुट्टी में करते, ज्यादा अच्छा रहता।'' कोई यह कहता, ''सूचनाओं का बोझ कम कर दीजिए और फिर आप जैसा कहेंगे वैसा हो जाएगा।'' इन सब कारणों से एक अजीब सी निराशा की सी स्थिति थी। प्रशिक्षण के प्रति उदासीनता का अंदाजा ऐसे भी लगाया जा सकता कि बीच में चाय के लिए पंद्रह मिनट का ब्रेक हुआ तो वे लगभग पैंतालीस मिनट से साठ मिनट चाय पीने में व्यतीत कर रहे थे, और पानी पीने में भी लगभग दस-पंद्रह मिनट का समय लग जाता था प्रत्येक दिन प्रात: आधा घंटा प्रार्थना, समाचार, पिछले दिन के कार्यों की समीक्षा में लगता था। कुल मिलाकर प्रशिक्षण में प्रतिदिन लगभग चार से साढ़े चार घंटे ही बात हो पाती थी।

परंतु मुझे इस बात का संतोष रहा कि शिक्षकों से बातचीत और आपसी संवाद ने जड़ता और नीरसता को थोड़ा कम तो जरूर किया। आगे मुझे यह भी महसूस हुआ कि सभी लोगों के पास कहने के लिए काफी कुछ था लेकिन लोग बोलते नहीं थे। शायद उनके मन में यह धारणा पक्की हो चुकी है कि बात कहकर भी कुछ नहीं होगा? जैसा चल रहा है, सब कुछ वैसा ही चलेगा। इसलिए बोलने से क्या फायदा। इसके अंतर्गत उन्हें अपनी बात करने काफी मौका दिया गया और उनकी प्रतिक्रियाओं का सम्मान किया। यहां यह भी महसूस हुआ कि शैक्षिक व्यवस्था के पदानुक्रम में यह जगह संकुचित हो गई है। इस जगह को और ज्यादा विस्तृत करने की जरूरत है। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षकों ने चर्चा में रूचि ली और विषय वस्तु में समझने का प्रयास किया।

प्रशिक्षण की विषयवस्तु में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, भाषा, गणित, पर्यावरण, मूल्यांकन आदि विषय रखे गए थे। पूरे प्रशिक्षण से यह अपेक्षा थी कि शिक्षक पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम को समझ पाएंगे। पाठ्यचर्या व मूल्यांकन तक की प्रक्रिया को समझना और उसके अंतर्सम्बन्धों को प्रशिक्षण के द्वारा संबोधित करना एक सकारात्मक पहल थी। जिसमें यह विचार निहित था कि राज्य के सारे शिक्षकों को दक्षता आधारित मूल्यांकन की विस्तृत रूप से जानकारी मिल सके और वे इस समझ के साथ अपनी कक्षा में शिक्षण कार्य कर सकें। आगे यह भी कोशिश की गई कि मुख्य विषय वस्तु पर बात करते हुए उसके विचार को सामने लाया जाए और उसे वर्तमान स्थितियों से जोड़ते हुए स्थापित किया जाए यह शैली शायद शिक्षकों को शायद पसंद आई। प्रशिक्षण के दौरान बातचीत में कक्षा शिक्षण से जुड़ी समस्याओं को शामिल किया गया और मिलजुल कर उन्हें उत्तर खोजने का प्रयास किया गया। कई बार तो कई शिक्षकों की तरफ से यह प्रतिक्रिया आती कि इस बात का जबाब बतला दिया जाए। कुछ समस्याओं पर वे बात भी करते और किसी मुकाम पर पहुँचने की कोशिश करते। बिना उनके मुद्दों को संबोधित करने का मतलब था इकतरफा संवाद। इससे फिर वही होता है जैसा विगत वर्षों में होता आया है।

प्रशिक्षण की प्रक्रियाओं में छोटे समूह में चर्चा, बड़े समूह में चर्चा, व्याख्याान आदि विधियों का प्रयोग किया गया। समूह चर्चा का काफी ज्यादा असर भी दिखाई पड़ा। कुछ ऐसे भी लोग थे जो कुछ नहीं बोलते थे। परंतु समूह चर्चा की प्रस्तुति ने इस जड़ता को भी तोड़ने में मदद की। इसका प्रभाव कार्यशाला के अंतिम दिन उन द्वारा दिए गए फीड बैक में देखा जा सकता है। जो कि संक्षेप में निम्नवत है-

- मॉडयूल के प्रत्येक बिंदु पर प्रतिभागियों की समझ बनाने की कोशिश की गई और बच्चे को पाठ्यक्रम से जोड़कर किस प्रकार अधिक से अधिक जानकारी दे सकते हैं। इस बात काफी जोर दिया गया।
- कुछ शिक्षकों ने कहा पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम का अंतर स्पष्ट हुआ। भाषा के संदर्भ में भी हमने काफी कुछ नया सीखा। गतिविधि के माध्यम से व कई साथियों के अनुभव से भी काफी कुछ सीखा।
- विगत वर्ष का प्रशिक्षण प्रभाव पूर्ण नहीं था, जिसे इस वर्ष देखा गया। प्रत्येक विषय को तुलनात्मक तथा प्रभावपूर्ण ढंग से समझाया गया।
- प्रशिक्षण में मॉडयूल की प्रत्येक विषयवस्तु पर चर्चा कर समझ बनाने का प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने की बात कही गई।
- भाषा शिक्षण में इस विषय की भ्रांतियां समाप्त हुई। जिसका उपयोग हम अपनी कक्षा में कर सकेंगें। परिवेश से बच्चों को जोड़कर रूचिपूर्ण शिक्षण करा पाएंगे।
- प्रश्न पत्र निर्माण से हम अपने विद्यालय स्तर पर अगर प्रश्न पत्रों का निर्माण करेंगे तथा मूल्यांकन का फीडबैक करके विद्यालय प्रगति योजना बनाकर उसके क्रियान्वयन का प्रयास करेंगे।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इन कमियों के बावजूद यह प्रशिक्षण एक सफल प्रशिक्षण के रूप में देखा जा सकता है। जहां एक तरह के संवाद की कोशिश की गई और दूसरी तरफ शिक्षकों में कक्षा में कुछ करने की तमन्ना थी। आगे जरूरत है इस प्रक्रिया को निरंतरता देने की.....।

विगत माह की गतिविधियां

अकादमिक संदर्भ समूह बैठक
बार्सू, भटवाड़ी (उत्तरकाशी)

सर्व शिक्षा अभियान के सहयोग से अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा उत्तरकाशी में गठित अकादमिक संदर्भ समूह की छठी बैठक बार्सू में 11 व 12 मई 2010 को आयोजित की गई। इस बैठक में संदर्भ समूह के सभी सदस्यों ने प्रतिभाग किया। बैठक की शुरुआत में जिला समन्वयक श्री सुनील भट्ट ने सबका स्वागत किया। इसके उपरांत अकादमिक संदर्भ समूह की अवधारणा को एक बार फिर सभी सदस्यों के सामने से रखा गया। बैठक के अगले सत्र में पहली पाँच बैठकों में लिए गए निर्णयों तथा उसके क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। इसके अंतर्गत यह बात उभरी कि इस बैठक के माध्यम से जिले में दक्षता आधारित मूल्यांकन, फीडबैक, विद्यालय प्रगति योजना के विचार को पूरे जिले में जगह मिली है। इस अवधारणा के साथ बाल शोध मेला, शिक्षक संगोष्ठी का विचार भी पूरे जिले में फैला है। इसके साथ पूर्व बैठकों में लिए गए निर्णयों में शिक्षक समस्या निवारण शिविर भी आयोजित किए गए हैं। यह महत्वपूर्ण बात है।

आगे के सत्र में भटवाड़ी ब्लाक के समन्वयक श्री राम प्रकाश रावत ने ब्लाक की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया। कार्ययोजना में शिक्षकों के साथ संगोष्ठियां, बाल शोध मेले, बाल गणना, प्रश्न बैंक तैयार करना आदि मुद्दे विशेष रूप से शामिल किए गए थे।

प्रथम दिवस के अंतिम सत्र में जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुरेश चन्द्र जोशी जी ने कहा कि विकासखण्ड भटवाड़ी की वार्षिक योजना में प्रश्न बैंक तैयार करने का जो विचार आया वह काफी उत्तम है। इसके लिए जरूरी है कि प्रत्येक संकुल समन्वयक संकुलस्तरीय मासिक बैठकों में शिक्षकों से प्रत्येक विषय में दो-दो दक्षता आधारित प्रश्न तैयार करवाए। इन प्रश्नों को डायट में संकलित कर प्रश्न बैंक तैयार किया जाए। इस प्रश्न बैंक की मदद से मासिक एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं को भी दक्षता आधारित मूल्यांकन करने में भी सुविधा होगी।

बैठक के दूसरे दिन गड़ोली के संकुल समन्वयक द्वारा बच्चों की नजर से मूल्यांकन का प्रस्तुतिकरण किया गया। इसके उपरांत डुण्डा के ब्लाक समन्वयक श्री महादेव गंगराड़ी द्वारा कक्षा 1 व 2 के बच्चों के साथ भाषा शिक्षण का प्रस्तुतिकरण किया गया। फिर डायट प्रवक्ता श्री एस. एस.

चौहान जी ने पिछली बैठक में लिए निर्णय के फॉलोअप के क्रम में बताया कि इसके अनुसार डायट को एक्शन रिसर्च पर एक कार्यशाला का आयोजन करना था। इसे डायट ने सफलतापूर्वक आयोजित किया है। महिला समाख्या की ओर से सुश्री निम्मी कुकरेती ने महिला समाख्या द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण किया। उन्होंने बताया कि किशोरियों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना महिला समाख्या का पहला लक्ष्य है। वर्तमान में महिला समाख्या जनपद के तीन ब्लाकों के 46 क्लस्टरों में काम कर रही है। शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक जत्थे, शैक्षणिक भ्रमण, साक्षरता कैम्पों का समय-समय पर आयोजन किया जाता है। ब्रिज कोर्स के जरिए किशोरियों को तीसरी, पांचवी और आठवीं की परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाता है। ड्रॉप आउट लड़कियों के लिए महिला शिक्षण केन्द्र खोले गए हैं।

इसके उपरांत मोरी के ब्लाक समन्वयक ने अपने ब्लाक का प्रस्तुतिकरण दिया तथा यह बताया कि इस ब्लाक में शिक्षकों की कमी से स्कूलों की स्थिति दयनीय बनी हुई है। वर्तमान में ब्लाक में कुल 130 विद्यालय हैं जिनमें कुल 71 शिक्षक व 90 शिक्षा मित्र शिक्षण कार्य कर रहे हैं। इनमें से 30 शिक्षा मित्रों का बीटीसी में चयन होने से स्कूल ताला लगने की कगार पर आ चुके हैं। अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए उन्होने कहा कि मोरी भी उत्तरकाशी जनपद का ही एक हिस्सा है। वहां के बच्चों को भी पढ़ने का हक है, इसलिए इस ओर गम्भीरता से सोचा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कुछ गांवों के जनप्रतिनिधियों से बात कर नरेगा की मद से 7 स्कूलों में शिक्षकों की व्यवस्था की है। जिससे कुछ स्कूल ताला बंदी से बच गए हैं।

अंत में दो दिवसीय बैठक के समापन पर जिले के अपर शिक्षा अधिकारी (बेसिक) श्री लीलाधर ब्यास जी ने व्यथित हो कर कहा कि मोरी विकासखण्ड में शिक्षकों की व्यवस्था पूरी करना एक चुनौती है साथ ही उन्होंने सदन को आश्वस्त किया कि

इसके लिए इस वर्ष विशेष ध्यान दिया जाएगा। संदर्भ समूह बैठकों की प्रभाविकता को लेकर उन्होंने कहा कि हम लोग अक्सर संदर्भ समूह बैठक की तिथि व स्थान निर्धारण के लिए ही साथ बैठ पाते हैं। मैं जिला समन्वयक व साथियों से चाहूंगा कि हम लोग एक बैठक से दूसरी बैठक के बीच में भी बैठें और संदर्भ समूह में लिए गए निर्णयों की समीक्षा करें। इससे हमारे काम की प्रभाविता बढ़ेगी। उन्होंने सदन में यह बात भी रखी कि माह जुलाई से पुन: शिक्षक समस्या निवारण शिविरों का आयोजन प्रभावी तरीके से किया जाएगा। इस पूरी बैठक में मुख्य संदर्भ व्यक्ति के रूप में फाउंडेशन के राज्य प्रमुख श्री अंनत गंगोला जी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण – उत्तरकाशी

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत इस वर्ष का दस दिवसीय सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण के लिए तैयार किए जाने वाले मास्टर ट्रेनर्स का दस दिवसीय प्रशिक्षण उत्तरकाशी जनपद में दो स्थानों में 10 से 19 जून 2010 के मध्य आयोजित किया गया। भौगोलिक परिस्थितियों के कारण गंगा घाटी के तीनों विकासखण्डों– भटवाड़ी, डुण्डा एवं चिन्यालीसौड़ के लिए यह प्रशिक्षण राजकीय इंटर कालेज, डुण्डा में आयोजित किया गया। इसमें 57 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें चार अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सदस्य भी प्रतिभागी के रूप में शामिल थे। यहां मुख्य संदर्भदाता की भूमिका संकुल समन्वयक श्री संजीव डोभाल तथा हिन्दी के प्रवक्ता श्री अतोल सिंह मेहर ने निभायी।

पूरे प्रशिक्षण में फाउंडेशन के सदस्य प्रशिक्षण की चर्चाओं को अंतरक्रियात्मक बनाने का प्रयास कर रहे थे। जिससे प्रशिक्षण की चर्चाओं को सही दिशा मे आगे बढ़ाया जा सके ।

जनपद के दूसरे भू–भाग यमुना घाटी के तीनों विकासखण्डों– मोरी, पुरोला एवं नौगांव के लिए राजकीय इंटर कालेज, नौगांव में यह प्रशिक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यहां 47 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। इसमें अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के तीन सदस्य प्रतिभागी के रूप में शामिल रहे। मुख्य संदर्भदाता के रूप में डायट प्रवक्ता श्री जे. एन. कोठारी एवं श्री एस. एस. चौहान ने प्रशिक्षण का कुशल संचालन व मार्गदर्शन किया। खंड शिक्षा अधिकारी नौगांव बतौर नोडल अधिकारी के रूप में लगातार प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन करते रहे तथा नौगांव के ब्लाक समन्वयक ने प्रशिक्षण के प्रबंधन संबंधी कार्यों को निभाने के साथ ही प्रशिक्षण में भी प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण के मुख्य संदर्भदाताओं ने प्रशिक्षण माडयूल को

प्रतिभागियों के साथ साझा करने का सराहनीय प्रयास किया।

प्रशिक्षण के दौरान उक्त दोनों स्थानों पर चल रहे प्रशिक्षण में डायट प्राचार्य, श्री रामकृष्ण उनियाल जी ने भी प्रशिक्षण के उपयोग के बारे में प्रतिभागियों को दिशा निर्देश प्रदान किया। इसके साथ ही जिला समन्वयक श्री अमरेन्द्रपाल सिंह परमार तथा श्री दीपक रतूड़ी ने भी प्रशिक्षण में अपनी सराहनीय उपस्थिति दर्ज करायी। प्रशिक्षण में मूल्यांकन, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, भाषा, गणित व पर्यावरण अध्ययन से जुड़े मुद्दे, बालिका शिक्षा, कोहार्ट आदि प्रमुख आदि विषयवस्तु पर चर्चा की गई। इसके उपरांत यह प्रशिक्षण पूरे जिले के शिक्षकों के लिए 21 जून से 30 जून 2010 के मध्य संकुल स्तर आयोजित किया गया। जिसमें फाउंडेशन के सदस्यों ने एक प्रशिक्षक के रूप में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण – ऊधम सिंह नगर

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण के लिए मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण का आयोजन जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ऊधमसिंह नगर में 10 जून से 19 जून 2010 के बीच सम्पन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में जिले के सभी ब्लाकों से चयनित 155 मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित करने के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के चार सदस्यों ने भी मुख्य संदर्भ व्यक्ति के रूप में अपना योगदान दिया तथा फाउंडेशन के तीन अन्य सदस्यों ने यह प्रशिक्षण एक प्रशिक्षक के रूप में लिया। जिससे वे ब्लाक स्तर के प्रशिक्षणों में मास्टर ट्रेनर्स को सहयोग प्रदान कर सकें। इन मुख्य संदर्भ व्यक्तियों में एक डायट फैकल्टी सदस्य, खटीमा ब्लाक के सह ब्लाक समन्वयक तथा जिले के दो राजकीय इण्टर कालेजों के दो एल.टी. ग्रेड के शिक्षकों ने

अपना योगदान दिया। इस बार का यह प्रशिक्षण विगत वार्षिक दक्षता आधारित मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षकों से उभरे प्रश्नों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। इस प्रशिक्षण के मुख्य बिंदु पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति, समवर्गीय शिक्षण, बालिका शिक्षा, मूल्यांकन, कोहार्ट आदि थे। प्रशिक्षण के दौरान काफी गर्मी के होते हुए प्रशिक्षण का समय 10 से 5 के बजाय 8 से 2 कर दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान सभी विषयों पर अच्छी चर्चा की गई।

प्रशिक्षण के दौरान एस.सी.ई.आर.टी., नरेन्द्र नगर में व्याख्याता सुश्री हेमलता तिवारी ने भी प्रशिक्षण के दौरान भ्रमण किया तथा उन्होंने प्रशिक्षण में भाषा से जुड़ी विषय वस्तु पर चर्चा की। उन्होंने शिक्षकों से उभरे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया। प्रशिक्षण के दौरान सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण मॉड्यूल व प्रोसेस सीट वितरित की गई। प्रशिक्षण के अंतिम दिन सभी प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया। जिसमें सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के आयोजन व इसकी विषय वस्तु पर संतोष व्यक्ति किया। इसके साथ ही प्रशिक्षण की व्यवस्था संबधित सुधारों पर जिले का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया।

सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण- ऊधम सिंह नगर

मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण के उपरांत जिले के प्रत्येक ब्लाक में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण का आयोजन 21 जून से 30 जून के बीच किया गया। इस प्रशिक्षण में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के 6 सदस्यों ने 6 अलग-अलग ब्लाकों में एक-एक संकुल पर मास्टर ट्रेनर्स के सहयोगी के रूप में अपनी सहभागिता की। इस वर्ष का यह प्रशिक्षण प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए उनके संकुल स्तर पर ही आयोजित किया गया व जूनियर विद्यालयों के शिक्षकों का प्रशिक्षण ब्लाक स्तर पर आयोजित किया गया। यह सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम मूल्यांकन, शिक्षा का अधिकार बिल, विद्यालय प्रगति योजना, भाषा, गणित व पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति आदि मुख्य बिंदुओं पर आधारित था। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य यह था कि शिक्षक पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम को गहराई से समझ सकें तथा कहीं न कहीं अपने स्तर पर स्थानीय संदर्भों के अनुरूप पाठ्यचर्या बनाने में सक्षम हों। जिससे उनमें दक्षता आधारित मूल्यांकन को समझने की दृष्टि विकसित हो। इसके साथ ही उनमें यह क्षमता विकसित हो कि वे पाठ्य पुस्तकों के इतर अपने स्थानीय स्तर के परिवेश को जोड़ते हुए प्रश्नों का निर्माण कर सकें। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विषयों पर गहराई से चर्चा हुई इसमें शिक्षकों की भागीदारी रही। शिक्षकों ने पाठ्यचर्या के आधार, मूल्यांकन, भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति, पाठ्यक्रम आदि विषयों में रुचि ली।

शिक्षकों की प्रशिक्षण के दौरान मॉड्यूल वितरित किए गए। जिससे उन्हें प्रशिक्षण के दौरान सामग्री को समझने में मदद मिली। इसके साथ ही प्रशिक्षण की एक खास बात यह भी रही कि प्रशिक्षण के दौरान सभी प्रतिभागियों को राज्य का पाठ्यक्रम भी वितरित किया गया जिससे वे अपनी कक्षाओं में पाठ्यक्रम के अनुसार काम कर सकें। शिक्षकों ने इस बात पर प्रसन्नता जाहिर की कि पाठ्यक्रम मिलने से उन्हें कक्षा में काम करने में मदद मिलेगी तथा पाठ्यक्रम से विभिन्न विषयों की दक्षताओं को समझ पाएंगे। इससे विद्यालय प्रगति योजना बनाने में भी मदद मिलेगी। प्रशिक्षण के दौरान जिला परियोजना कार्यालय व डायट के प्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न ब्लॉक व संकुल स्तर पर प्रशिक्षणों का अवलोकन किया गया तथा प्रशिक्षण के आयोजन पर संतोष व्यक्त किया। इसकी एक रिपोर्ट राज्य परियोजना कार्यालय को भी प्रेषित की गई। इस प्रशिक्षण की विशेषता यह रही कि पूरे जिले में यह प्रशिक्षण केवल 10 दिनों में विभिन्न बैच बनाकर सम्पन्न किया गया। जिससे शिक्षक जुलाई में अपने-अपने विद्यालयों में सुचारू रूप से काम कर सकें।

प्रशिक्षण में विशेष रूप से प्रक्रियाओं पर बल दिया गया। जिसमें सभी प्रतिभागियों को चर्चा में शामिल किया गया। सभी प्रतिभागी अपने-अपने स्तर से अपने प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास कर रहे थे। मुख्य संदर्भदाताओं द्वारा प्रशिक्षण माड्यूल के साथ-साथ अन्य संदर्भ पुस्तकों का भी उपयोग किया। प्रतिभागी साथी भी इन संदर्भ पुस्तकों का उपयोग कर रहे थे तथा चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी कर रहे थे।

प्रशिक्षण में पाठ्यचर्या के संदर्भ में पाठ्यक्रम पर काफी चर्चा रही। इसमें प्रतिभागियों ने अपने-अपने विद्यालय के लिए पाठ्यक्रम बनाने का भी प्रयास किया। पाठ्यक्रम समझने के क्रम में ही विषयों की प्रकृति को समझना तथा विषयों की प्रकृति तथा पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री का विकास करना आदि मुद्दों पर काफी अच्छी चर्चा की गई। इसके उपरांत मूल्यांकन पर भी विचारपूर्ण चर्चा हुई। जिसमें सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विषय पर ज्ञानात्मक, बोधात्मक, कौशलात्मक तथा अनुप्रयोगात्मक श्रेणी के प्रश्न बनाए जिससे सभी प्रतिभागियों की दक्षता आधारित मूल्यांकन की अवधारणा समझने में आसानी हुई। ••

किताबों की दुनिया में पाया खजाना

– कमला भसीन

किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना
ये साथी मेरी औ मेरा आशियाना
किताबों के संग-संग जंगल मैं घूमी
थे वाकई वो जंगल न दिखती थी भूमि
बोलती हवाओं के संग-संग मैं झूमी
तितली ने आके नजर मेरी चूमी
कोयल और तोते सुनाते थे गाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना।
किताबों ने मुझको दिखाए समन्दर
चमत्कारी जीव छिपे जिनके अंदर
मगर और घड़ियाल यहां के सिकन्दर
ढूंढे न मिलते समन्दर में बंदर
मछली सा तैराक मैंने न जाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना।
किताबों ने महलों में मुझको पहुंचाया
वहां मेरे चलने को कालीन बिछाया
राजा और रानी को खाते दिखाया
रानी को सखियों संग गाते दिखाया
महलों के ढंगों को मैंने पहचाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना।
लैला-मजनूं के किस्से किताबों में पाए
शीरी-फरियाद के दीदार इन्हीं ने कराए
इन्हीं ने मुझे राज सबके बताए
इन्हीं ने मुझे गीत और साज सुनाए
मेरे मन में भी इनने छेड़ा तराना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना
कभी साफ-सीधी कभी ये पहेली
इन्हीं संग सोई इन्हीं संग खेली
किताबें बनी मेरी संगी-सहेली
इन्हीं की बदौलत कभी न अकेली
ये हों पास मेरे तो भूलूं जमाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित

सम्पर्कः

सुश्री सौजन्या
(राज्य परियोजना निदेशक)
डॉ. के. एन. बिजल्वाण
(समन्वयक, पेडागॉजी)
श्री अनंत गंगोला
(राज्य प्रमुख – अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन)

कार्यालयः

लर्निंग गांरटी कार्यक्रम
राज्य परियोजना कार्यालय, शिक्षा संकुल,
ननूर खेड़ा (निकट विद्यालयी शिक्षा निदेशालय)
तपोवन मार्ग, रायपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)
दूरभाषः 0135-2781941, 2781942, 2781943

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन
24, मयूर विहार, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून-248001
दूरभाषः 0135- 3253382